स्नातकोत्तर हिन्दी, द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (भारतेन्दु युग से आद्यावधि तक)

महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' और 'हिन्दी जागरण'

प्रस्तोताः

डॉ. रमेश प्रसाद गुप्ता
सह–प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

आधुनिक हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' के साथ–साथ महावरी प्रसाद द्विवेदी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी भाषा और साहित्य के केवल निर्माण ही नहीं, उसके 'नवजागरण' यानि नवस्वरूप–निर्धारण एवं नवोत्थन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाँति महावीर प्रसाद द्विवेदी का भी महत्वपूर्ण योग है। इन दोनों ने अधिक रचनात्मक एवं वैचारिक तीनों स्तरों पर हिन्दी को नयी विचारण, भंगिमा एवं स्वरूप यानि हिन्दी नवजागरण में महती भूमिका निभाई। इस हेतु महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की ही तरह पत्रिका एवं लेखकों के समूह के माध्यम से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के स्वरूप–निर्माण में निरंतर प्रेरक तत्व का कार्य किया। 'भारतेन्दु–मंडल' की तरह ही इनका भी अपना एक 'द्विवेदी–मंडल' था, जिसमें प्रख्यात कवि मैथिलीशरण गुप्त आदि थे। प्रसिद्ध आलोचक डॉ0 रामविलास शर्मा हिन्दी–निर्माण एवं नवजागरण में महावरी प्रसाद द्विवेदी की भूमिका की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि ''द्विवेदी जी स्वयं कथा–लेखक नहीं थे और मैथिलीशीरण गुप्त की तुलना में कवि भी बहुत साधारण थे, किन्तु वैचारिक स्तर पर वहरन दोनों से आगे हैं, इन दोनों के काव्य–संसार और कथा–संसार की रूपरेखाएँ उनके गद्य में स्पष्ट दिखाई देती है। इस दृष्टि से उन्हें युग–निर्माता कहना पूर्णतः संगत है।'' (महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण) यानि महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने समकालीन एवं परवर्ती लेखकों यथा मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचंद आदि का वैचारिक निर्देशन करते रहे, इसलिए उन्हें युग–निर्माण कहा गया।

हिन्दी भाषा के स्वरूप–निर्माण एवं नवजागरण में महावीर प्रसाद द्विवेदी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की ही तरह पत्रिका के सम्पादन के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे पहले

रेल–विभाग में तार बाबू के रूप में कार्यरत थे। 1903 ई. में उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादकीय दायित्व अपेक्षाकृत कम वेतन पर स्वीकारा। यह उनके भाषा एवं साहित्य–प्रेम को सूचित करता है। 'सरस्वती' पत्रिका अपने नाम के बावजूद केवल साहित्यिक पत्रिका नही थी। जैसे भारतेन्दु अपनी पत्रिका 'कविवचन सुधार' में स्वदेशी के व्यवहार आदि के लिए प्रतिज्ञा–पत्र एवं लेख प्रकाशित करते थे, वैसे ही 'सरस्वती' में महावीर प्रसाद द्विवेदी विभिन्न विषयों पर लेख एवं अर्थशास्त्र से सम्बन्धित अपनी 'सम्पतिशास्त्र' पुस्तक के अंश भी छापते थ्ज्ञे। महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक के रूप में शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जिस पर उन्होंने टिप्पणियाँ न लिखीं हों और कम ही उस युग के लेखक होंगे, जिनको भाषा का संस्कार न दिया हो। उन्होंने गद्य ही नहीं कविताकी भाषा को भी व्यवस्थित करने का कार्य किया। प्रतिष्ठित आलोचक डॉ. बच्चन सिंह का ठीक ही कहना है कि 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने गद्य–पद्य दोनों की भाषा को व्यवस्थित और भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाने की चेष्टा की। इस समय पढ़े–लिखे लोगों का एक वर्ग–मध्यवर्ग–तैयार हो चुका था। उनका समस्त प्रयास साहित्य का इस वर्ग की शिक्षा और मर्यादा के अनुरूप बनाना था।'' (आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास)

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने तत्कालीन प्रचलित खड़ी बोली हिन्दी भाषा के स्वरूप को संकलित एवं व्यवस्थित करने का कार्य किया, क्योंकि उस समय भाषा–व्यवहार में वैविध्य अधिक था, प्रतिमानीकरण या एकरूपता कम। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से भाषा को एक व्यवस्था एवं एकरूपता देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे स्वयं भी सम्पादक के अतिरिक्त रचनाकार, व्याकरण, अनुवादक, अर्थशास्त्री आदि सब थे। उन्होंने यह सब अपने स्वाध्याय के बल पर अर्जित किया था। उन्होंने भाषा की अस्मिता और व्याकरणगत त्रुटियों को दूर करने का निरंतर अथक प्रयास किया। इसमें कोई संदेह नहीं किया भाषागत अराजकता में व्यवस्था लाने का सर्वाधिक श्रेय इन्हीं को है। यही नहीं अपने युगीन एवं परवर्ती लेखकों यथा– मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद, निराला आदि को भाषिक दृष्टि एवं अनुशासन देने का महती काम महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ही किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल महावीर प्रसाद द्विवेदी के अवदान को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि ''गद्य की भाषा पर द्विवेदी का शुभ प्रभाव का स्मरण जब तक भाषा के लिए शुद्धता आवयश्क समझी जायेगी, तब तक बना रहेगा।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनाकार–सम्पादक के साथ–साथ मूलतः वे व्यवस्थापक थे, जो तत्कालीन समय के नये–नये बनते खड़ी बोली हिन्दी भाषा और साहित्य के नव–निर्माण एवं विकास की ऐतिहासिक आवश्यकत थी। डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में ''उनकी तुलना 18वीं शताब्दी के अंगरेजी लेखक डॉ0 जानसन से किसी रूप में हो सकती है, जिनकी अपनी रचनात्मक क्षमता बहत बड़ी न थी, पर जिनके बहुआयामी व्यक्तितव में उनके प्रकार की प्रतिभा थी। दोनों कवि हैं, अधिकतर इतिवृत्त परक, गहरे भाषा विद् और संपादक हैं, अनेक कवियों और लेखकों के गुरू–मित्र तथा प्रेरक हैं तथा सबसे बड़ी बात यह कि आदि से अंत तक निर्भीक हैं, पर पूरी शिष्टता के साथ।'' (हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास) महावरी प्रसाद द्विवेदी 1903 ई. से 1920 ई. तक 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक रहे। उनके प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन से कवियों और लेखकों की एक समर्थ पीढ़ी का निर्माण हुआ। साथ ही खड़ी बोली हिन्दी के परिष्कार एवं स्वरूप–स्थिरता प्रदान करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई, जिसके फलस्वरूप हिन्दी भाषा और साहित्य में एक नयाउत्थान एवं जागरण हुआ। उनके सम्पादक एवं नेतृत्व में 'सरस्वती' के माध्यम से बंगाल का आध्यात्मिक–सामाजिक नवजागरण हिन्दी–क्षेत्र (प्रदेश) में अधिक व्यावहारिक एवं यथार्थ भावभूमि पर संभव हो गया। यह बंगाल और हिन्दी–पट्टी (बैसवाड़े) का संयोग 'सरस्वती' के प्रकाशकीय एवं सम्पादकीय मेला में ही देखा जा सकता है। 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशक थे बंगाली भद्रपुरूष चिंतामणि घोष और संपाक महावरी प्रसाद द्विवेदी ठेठ बैसवाड़े (उ.प्र.) के निवासी थे। प्रसिद्ध आलोचक अयार्थ नंद दुलारे वाजपेयी उनके योगदान का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं कि ''साहित्य के क्षेत्र में किसी एक व्यक्ति पर इतना बड़ा उत्तरदायित्व इतिहास की शक्तियों ने कदाचित् पहली बाररखा था और पहली बाद द्विवेदी जी ने इस उत्तरदायित्व के स्थूल निर्वाह का अनुपम निदर्शन प्रस्तुत किया।''

♣♣♣♣♣